International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5, May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

रेणु के उपन्यासों में कृषक – चेतना के विविध आयाम परती – परिकथा, मैला आंचल, कितने चौराहे, जुलूस, पल्टू बाबू रोड, दींघतपा इत्यादि कृषक – जीवन का गणित ।

विनय पासवान,

शोध छात्र

जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा (सारण),

फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों का पारायण करने से विदित होता है कि उन्होंने उन उपन्यासों में कृषक – चेतना के विविध आयामों का बड़ी ही कुशलता के साथ चित्रण किया है ।

परती : परिकथा –

रेणु लिखित ' परती : परिकथा ' में कृषक जीवन के विभिन्न आयामों के चित्र देखे जा सकते हैं। रेणु ने बहुत निकट से स्वातंत्र्यपूर्व और स्वातंत्र्योत्तर कृषक – जीवन को देखा था तथा उनके दुःख – दर्द का अनुभव किया था । किसानों के जीवन – परिवेश का चित्रण रेणु ने बड़े ही स्वाभाविक ढ़ंगसे किया है। 'हिन्दी उपन्यासों में परिवेश के प्रति सजगता की बात प्रेमचन्द्र से शुरू होती है और उसके बाद अन्य उपन्यासकारों ने भी इसे एक आवश्यक प्रतिमान के रूप में स्वीकार किया। 'रेणु' इन सबसे अलग हटकर 'परिवेश' को कथ्य के रूप में प्रस्तुत करते हैं।'' उदाहरण के लिए कोशी मैया का यह कथन द्रष्टव्य है। – 'नहीं, धरती मरेगीनहीं। जहाँ – जहाँ बैठकर मैं रोयी हूँ , आँसू की उन धाराओं के आस – पास धरती का प्राण सिमटा रहेगा। ''''''' हर वर्ष पौष पूर्णिमा के दिन उन धाराओं में स्नान से पाप धुलेगा । युग – युग के बाद, एक –एक प्राणी पाप से मुक्त होगा। तब, फिर सारी धरती पर हरियाली छा जायेगी। ''''''''' धाराओं के आसपास सिमटे हुए प्राण नये – नये रंगो में उभरेंगे। ''

गाँव में सरकार की ओर से जब लैण्ड सर्वे सेट्रलमेण्ट का आरंभ होता है तो जमोन की पैमाइश होने लगती है। सभी लोग काफी सतर्क हैं कि उनकी जमीन की पैमाइश ठीक ढ़ंग से हो रही है या नहीं । अमीन का कहना है कि बैंटाइदारों या आधीदारों का जमीन पर पूरा – पूरा अधिकार हो सकता है अगर वे इस बात का सावित कर दें कि जमीन उसी के द्वारा जोती – बोयी जाती है।

देश के स्वतंत्र हो जाने पर जब जमीन्दारी प्रथा समाप्त हो गयी तो सरकार ने लैण्ड सर्वे सेन्ट्रल का जो प्रयोग किया। सरकार ने अनुभव किया कि पूर्णिया जिले से ही इस काम को शुरू किया जाय। उपन्यासकार इस कार्य पर व्यंग करते हुए कहता है – ''''''' हिन्दुस्तान में, सम्भवतः सबसे पहले पूर्णिया जिले पर ही लैण्ड सर्वे ऑपरेशन का प्रयोग किया गया। जिले के जमींनदारों और राजाओं की जमींदारीयों का विनाश अवश्य हुआ। किन्तु, हिन्दुस्तान के सबसे बड़े किसान यहीं निवास करते हैं। '''''''''''' गुरूवंशीबाबू जमींनदार नहीं , किसान है। इन्हे हजार बीघे जमीन है, दो – दो हवाई जहाज रखते है। दूसरे हैं भोला बाबू। पन्द्रह हजार बीघे जमीन है, डेढ़ दर्जन ट्रैक्टर रखते है। पर यह बात भी सच्ची है कि वे जमींदार नहीं। किसान सभा की सदस्यता से किस आधार पर वचिंत करेंगें उन्हें? यहाँ पाँच सौ बीघेवाले किसान तृतीय श्रेणी के किसान समझे जाते है और हर गाँव पर इन्ही किसानों का राज है। भूमिहीनों की विशाल जमात! जगती हुई चेतना! '''''''जमींदारी– उन्मेलन क बाद भी हर साल फसल काटने के समय एक – डेढ़ सौ लड़ाई – दंगे और चालीस – पचास कत्ल होते रहे तो फिर से जमीन की बन्दोवस्ती की व्यवस्था की गयी । '''''' सारे जिले में गत तीन वर्षो से विशाल आँधी चल रही है।'' अमीन साहब का कहना है – 'यदि किसी प्लॉट पर कौआ भी आकर कह दे कि जमीन मैंनें जोती – बोयी है, तो उसका नाम लिखने को हम मजबूर हैं। '''' यही कानून है। यह मत समझो कि बौण्डोरी बाँध रहा हूँ।''

जिले भर के किसानों और भूमिहीनों में महाभारत मचा हुआ है। भाई – भाई में, बाप – बेटे में, पड़ोसी – पड़ोसी में झंझट चल रहा है। सभी एक – दुसरे को शंका की दृष्टि से देख रहे हैं। इस लैण्ड सर्वे सेट्रलमेण्ट के कारण जो विषम स्थिति उत्पन्न हुई उसका वर्णन करते हुए उपन्यास का कथन है – 'गुलरीवाली जमींन की मोंड़ पर जाकर जमा हुए सभी । तीसो एकड़ में धान के पौधे, दुध – भरी बालियों के गुच्छे झुकाये हुए! हवा का हल्का झोंका भी खेत में तरंग पदा कर देता है। तारा बाबू भी किसान – परिवार के पुत्र हैं। धान देखकर उनका जी जरा जुड़ा गया । बोले – ''पहले यहीं से !''लुत्तो ने कहा –– ''देर क्यों करते हैं? शुरू कर दीजिए!''

तारा बाबू कागज – पतर ठीक करने लगे। रामलखनजी ने खँजड़ी बजाकर गीत शुरू किया। और, अमीन साहब कड़ी का झब्बा खोलकर गुनिया ठीक करने लगे! आस – पास कुछ लोग आकर जमा हुए। '''' घेर, घेर, घेर! गाँव के पास कुछ लोग दौड़ रहे हैं। लुत्तो ने कहा – '' खरहे का शिकार कर रहे है, शायद!'' किन्तु, पलक मारते ही सरबन सिंह का छोटा भाई लालचन सिंह दस – पन्द्रह लठैतों के साथ आ धमका – '' क्या हो रहा है? क्या समझ लिया है? मुसम्मात की जमींन है? '''' मारों सालों को !''

लठैतों ने लाठी भाँजनी शुरू की । अमीन साहब जरीब की कड़ी छोड़कर भागे । तारा बाबू के सिर पर लाठी लगी तो वह सिर पर झोली रखकर बैठ गये। दूसरी लाठी में चित्त हो गये । ''''' भूदानियों पर लट्ठ पड़ने लगे '' साला! पहले जमींदारी खत्म किया। तब सर्वे और तब सरबोधन। साला सरबसाधन। और लो ब्योरा! बाँटो जमीन अपने बाप की!'' तड़ा – तड़! तड़ा – तड़! रामलखनजी धरती पर लोट गये। लुत्ता का एक भी लाठी नहीं लगी। तारा बाबू के गिरते ही वह भागा ''''' फलाहार करिए! किन्तु, टमाटर परोपकारीजी अडिग खड़े रहे। लाठियाँ पड़ती रही, सिर से खून की धारा बह चली, किन्तु उन्होंनें बचाव के लिए हाथ भी नही हिलाया। उन्होंनें प्रार्थना शुरू कर दी : 'ऊँ पूण है वह, पूर्ण है यह, पूर्ण से निष्पन्न होता पूर्ण है ''''' सब ओर आत्मा घेरकर आत्मज्ञ सो – है बैठ जाता प्राप्त कर लेता उसे –जो तेज से परिपूर्ण!''''''' घायलों को छोड़कर भागे संभी।''इस झगड़ा –झंझट में कामरेड मकबूल और लुत्तो किसानों को बरगला कर उनस पैसे की खूब उगाही करते हैं।

कृषक – चेतना का एक यह भी आयाम है कि गाँव के किसान लोग सार्वजनिक स्थान पर कीर्तन करते है, नाटक देखते हैं और भाँति – भाँति के पर्व – त्योहार मनाते हैं।

मैला आँचल –

'मैला आँचल' उपन्यास में भी उन्होंनें कृषकों की दयनीय स्थिति, महाजनों और जमीन्दारों द्वारा उनके शोषण तथा उन पर किये जानेवाले अत्याचार का बड़ा ही यथार्थ चित्र उकेरा है। कड़ी मिहनत द्वारा खेत में अन्न उपजाकर भी किसानों के घर में आवाज नही आ पाता। वह अनाज महाजनों या जमीन्दारों के पास चला जाता है । 'आर्थिक बदहाली का यह हाल था कि राज दरभंगा, सुल्तानपुर एस्टेट, राजा पी0 सी0 लाल, राज बनौली के अलावा अन्य दूसरे सामंतों, अर्द्ध – सामंतों, जमींदारों की मनमानी को यहाँके लोगो ने बिना किसी शिकवा – शिकायत के वर्षो तक सर आँखो पर उठाये रखा । पुश्तैनी कृषि व्यावस्था और परिवर्तनकामी इच्छा – शक्ति विहीन अर्थव्यवस्था के तहत यहाँ के लोग खिलैने समझे जाते रहे। नतीजा यह कि श्रम और उत्पादन का खुल्लमखुल्ला शोषण ''''''' विरोध और प्रतिकार में 'चूँ' तक नही । भूगोल के पन्ने पर ऐसी माटी ओर ऐसे लोग कम ही दीखते हैं। '[6]

मेरीगंज गाँव के किसानों की ऐसी विषय स्थिति है कि उनके परिवार को न तो भर पेट भोजन मिल पाता है, न भर तन कपड़ा ही। वे बँधुआ मजदुर बनकर जमीन्दारों के यहाँ काम करते है। वे ऋण से इस प्रकार ग्रस्त हो गये है कि ऋण मे ही मर जाते हैं और महाजन या जमीन्दार उनके पुत्र से ऋण वसुलते हैं अथवा उसके बदले उससे बेगार करवाते हैं। सूदखोर किसानों को कर्ज देकर एक के दस वसूलते हैं।

गाँव में कुछ संथाल – किसान भी हैं। इनलोगों ने जंगल को काट – काट कर जमीन को खेती योग्य बना लिया है और उस पर खेती भी करने लगे हैं। ऐसे किसानों की जमीन को जमीन्दार लोग सरकारी जमीन बताते हैं और उनसे लगान वसूलते हैं।

जमीन्दारों से तंग आकर किसान लोग विद्रोह की मुद्रा में हैं, मगर भय से वे कुछ कर नहीं पाते। विभिन्न राजनीतिक पार्टियाँ आकर वहाँ सभा करती हैं और स्वार्थ – सिद्धि के लिए किसानों को भड़काती हैं। सोशिलस्ट पार्टी एक सभा में कालीचरण कहता है – 'जमीन किसकी?..... जोतनेवालों की! जो जोतेगा, वह बोयेगा, वह काटेगा। कमानेवाला खायेगा। इसके चलते जो कुछ हो।''[7]तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद, हरगौरी सिंह एवं अन्य तहसीलदार गरीब किसानों का कम शोषण नहीं करते।

जब विश्वनाथ प्रसाद की बेटी ममता का विवाह डॉ0 प्रशान्त से हो जाता है जो डॉ0 प्रशान्त अपने श्वसुर विश्वनाथ प्रसाद को काफी समझाते – बुझाते है और किसानों पर अत्याचार न करने की बात कहते ह।विश्वनाथ प्रसाद का हृदय – परिवर्तन हो जाता हैं। वे कुछ सोच – विचार कर अपने कमरे से बाहर निकलकर सुमिरत दास से कहते हैं – 'सुमिरत दास! लेंगों से कह दो '''' हरेक परिवार को पाँच बीघा के दर से जमीन मैं लौटा दूँगा। साँझ पड़ते –पड़ते मैं सब कागज – पत्तर ठीक कर लेता हूँ। '''' और संथालटोली में जाकर कहो ''''' वे लोग भी आकर रसीद ले जाएँ। एक पैसा सलामी या नजराना, कुछ भी नहीं! अरे, मैं क्यों दूँगा? दे रहा है नया मालिक! ''''' मालिक साहब का हुकूम है, सुनते हो नहीं! रो रहा है वह! वह हुकूम दे रहा हैं। लौटा दो! दे दो, खेलावन को उसकी जमीन का सब धान दे दो।'' तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद के मुँह से ऐसी बातें सुनकर प्रशांत और ममता एक – दूसरे का मुँह देखने लगते हैं। उन दोनों की इस स्थिति को देखकर विश्वनाथ प्रसाद उन्हें कहने लगते हैं – मुँह क्या देखते हो? मुझे पागल समझते हो? ठीक है, पागल क्यों नहीं समझोगे? '''' योगेश्वर कृष्ण ने अपनी सारी विद्याबुद्धि लगाकर कोशिश की, मगर दुर्योधन ने साफ कह दिया – सूई की नोक पर जितनी मिट्टी चढ़ती है उतनी भी नही दूँगा।''''' जमीन! ''''' धरती! एक इंच जमीन के लिए हायकोठतक मुकदमा लड़ते है लोग! और मै सौ बीघे जमीन दे रहा हुँ। पागल तो तुम लोग हो! अरे, यह जमीन तो उन्ही किसानों की है, नीलाम की हुई, जब्त की हुई, उन्हे वापस दे रहा हुँ। मैं कहता हुँ, ऐलान कर दो, मालिक का हुक्म हैं। '' विश्वनाथ प्रसाद के इस कृत्य से सभी किसानों में प्रसन्नता की लहर दौड़ पड़ती है। ये किसान खुशी में स्वराज्य का उत्सव मनाते है, 'महात्मा गाँधी की जय' का नारा बुलन्द करते हैं तथा विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन करते हैं। वे लोग गीत गा – गाकर माँदल बजाते हैं।

कितने चौराहे –

रेणु लिखित 'कितने चौराहे' उपन्यास में महात्मा गाँधी जी – करों या मरों – पुकार श्रवण कर 'भारत छोड़ो' आन्दोलन की आग में कुद पड़नेवाले राष्ट्रभक्त किशोरों की कथा कही गयी है। इस उपन्यास के माध्यम से उपन्यासकार ने दश के नौजवानों को अपने कर्तव्य – पंथ पर अग्रसर होते रहने की प्रेरणा दी है और प्रलोभनों के चौराहे पर नही रूकने का संदेश दिया हैं।

देहात का होनहार बालक मनमोहन जब शहर में अध्ययन के लिए जाने लगता है तो उसके पिता उसे शिक्षा देते हैं कि ' शहर जाकर शहरी लड़का मत बन जाना। बीड़ी – सिगरेट मत पीना।'[10] मनमोहन शहर जाकर अपने पिता द्वारा दी गई शिक्षा का अक्षरशः पालन करता है। विपरीत परिस्थितियों के बावजूद वह त्रैमासिक परिक्षा में प्रथम स्थान पाता है। पियक्कड़ मामा के घर पर रहकर भी अपने हाथ से मदिरा न छुआ और न शहर के चौराहे पर बेमतलब गया।

बड़े महाराज ने भी मनमोहन से कहा था – 'कभी झोंक में आकर तुम भी पढ़ना –लिखना मत छोड़ बैठना। ..... अभी सीधे बढ़े चलो। राह में छाँव में कहीं बैठना नही हैं। कितने चौराहे आयँगे। न दाँये मुड़ना, न बाँये –– सीधे चलते जाना।'[11] मनमोहन अपने जीवन को आदर्श बनाकर सबके लिए अनुकरणीय बन जाता है।

इस प्रकार 'कितने चौराहे' उपन्यास के अन्तर्गत सामाजिक और राजनीतिक चेतना की व्यंजना तो हुई है, मगर इसमें कृषक – चेतना की व्यंजना नही मिलती है।

जुलूस–

रेणु लिखित 'जुलूस' उपन्यास में पूर्वी पाकिस्तान (वर्तमान में बैंगला देश) के विस्थापितों की कथा है। 'जुलूस' वस्तुतः अपनी जमीन से विस्थापित ऐसे लोगों की कथा है जिन्हें विघटनकारी तत्त्वों – साम्प्रदायिक दरिंदों तथा प्राकृतिक आपदाओं ने अपनी जमींन से उखाड़कर एक प्रश्नवाचक स्थिति में ला दिया हैं। ऐसे ही असहाय और बेबस लोग जुलूस की शक्ल में सड़क पर उतर आये हैं। इसके मूल में राजनैतिक और साम्प्रदायिक शक्तियाँ ही नहीं वैयक्तिक स्वार्थ, कामोत्तेजना और बर्बरता की भी भूमिकायें हैं, जिनकी परिणति को भोगते लोगों की निरीहता के प्रति मानवीय सम्वेदना को जगाने में रेणु को सफलता मिली हैं।'[12] इस उपन्यास में कृषक – चेतना से सम्बन्धित कोई बात नहीं है।

पल्टू बाबू रोड –

' पल्टू बाबू रोड' उपन्यास में भी कृषक – चेतना की व्यंजना नही मिलती। इस उपन्यास में राजनीति की चर्चा अवश्य हुई है। पल्टू बाबू न तो किसी राजनीतिक दल के साथ है और न वे स्वयं ही किसी दल के नेता हैं, मगर वे बड़ी चालाकी और कूटनीति से समाज के विभिन्न वर्गो पर अपना दबदबा बनाये रखने में बड़े माहिर है। बड़े – बड़े नेताओं को वे अपनी जेब में रखते हैं। विभिन्न दलों के नेतालोग उनके इशारे पर चलते है। बड़े – बड़े उद्योगपति, व्यवसायी और नेतालोग उनकी कृपा के आकांक्षी हैं। प्रत्येक तबके के लोगों को विश्वास हैं कि पल्टू बाबू का वरद् हस्त जिसके माथ पर पड़ जायगा, उसके मार्ग की सभी बाधाएँ क्षण भर में दूर हो जायँगी पलक मारते ही राई को पर्वत और पर्वत को राई बना देना उनके बाँये हाथ का खेल है। उनका विरोध करने की हिम्मत किसी में नही है क्योंकि वे अपने साथ असामाजिक तत्त्वों को भी रखते हैं। इस प्रकार दादागिरी की राजनीति इस उपन्यास में दर्शायी गयी हैं। इसमें कृषक – चेतना की चर्चा नही मिलती।

दीर्घतपा –

रेणु लिखित 'दीर्घतपा' उपन्यास में भी कृषक – जीवन का गणित नही मिलता। इस उपन्यास की नायिका है बेला गुप्ता जिसके सम्बन्ध में रेणु का कथन है। ' एक हीन मनोवति का कोहरा – युद्ध के बाद से ही घना होकर सारे समाज पर छा रहा है। इस धुंध में दीपावली की तरह खिली बेला गुप्त बुझ गयी ।'[13] बेला गुप्त एक आदर्श चरित्र की नारी है। उपन्यास की पात्रा ज्योति आनन्द और बेला गुप्त में यहीं अंतर हैं कि दोनों जीवन के उतार – चढ़ाव को देखती हुई सामाजिक विकृतियों का शिकार बन चुकी हैं, मगर बेला गुप्त उन विकृतियों से हट चुकी है, जबकि ज्योति आनन्द ने उन्हें अपना व्यवसाय बना लिया हैं। ज्योति आनन्द समाज के सड़े – गले पतित जीवन का प्रतिनिधित्व करती हैं जबकि बेलागुप्त एक प्रगतिशील नारी के साथ – साथ विद्रोहिणी भी हैं। बेला गुप्त समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार से संघर्ष करती दीख पड़ती हैं। वह अपने जीवन में भगिनी निवेदिता के आदर्श को साकार करना चाहती है। भगिनी

निवेदिता का यह कथन उसके जीवन में प्रतिफलित होता हैं –'And the majerty of the soul comes fourth only when someone is wounded to his depth'[14]

दीर्घतपा उपन्यास में भी कतिपय अन्य बातों की चर्चा तो मिलती है, मगर इसमें कृषक – जीवन की अभिव्यक्ति नही मिलती है।

इस प्रकार फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में केवल 'परती : परिकथा' तथा 'मैला आँचल' में ही कृषक – जीवन के गणित मिलते हैं, अन्य उपन्यासों में नही।

संदर्भानुक्रम–

1. सं0 त्रिभुवन सिंह : आधुनिक साहित्यिक निबंध, पू0 सं0 324
2. फणीश्वरनाथ रेणु : परती : परिकथा, पू0 सं0 13
3. फणीश्वरनाथ रेणु : परती : परिकथा, पू0सं0 25
4. फणीश्वरनाथ रेणु : परती : परिकथा, पू0 सं0 25
5. फणीश्वरनाथ रेणु : परती : परिकथा, पू0 सं0 246
6. सं0 डॉ0 अशोक कुमार आलोक : फणीश्वरनाथ रेणु : सृजन और सन्दर्भ, प्र0 सं0 1994, आधार प्रकाशन, पंचकूला, हरियाणा, पृ0 सं0 257.
7. फणीश्वरनाथ रेणु : मैला आँचल, बारहवीं आवृत्ति 2007, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 सं0 100.
8. फणीश्वरनाथ रेणु : पृ0 सं0 309.
9. फणीश्वरनाथ रेणु : पृ0 सं0 309 –10.
10. फणीश्वरनाथ रेणु : कितने चौराहे, पृ0 सं0 07.
11. फणीश्वरनाथ रेणु : पृ0 सं0 99.
12. सं0 डॉ0 अशोक कुमारआलोक : फणीश्वरनाथ रेणु : सृजन और सन्दर्भ, प्र0 सं0 1994, आधार प्रकाशन,

पंचकूला, हरियाणा, पृ0 सं0 150,

13. फणीश्वरनाथ रेणु : दीर्घतपा, पृ0 सं0 159.

14. John Robertson : Massege of Sister Nivedita, 2nd Edition 1994, Minarva printing press, Buckingham , page no, 22.